B-2

L-4

दिनांक
28-10-23

प्लासी से बक्सर के युद्ध तक

- प्लासी की विजय के बाद अंग्रेजों ने मीर जाफर को नवाब बनाया और अपने स्वार्थों की पूर्ति करने लगे किन्तु शीघ्र ही जाफर उन्हें अपेक्षाकृत लाभदायक महसूस नही हुआ अत: इस पर बकाया राशि तथा डचों के साथ संपर्क का आरोप लगाकर उसे गद्दी से उतार दिया तथा मीर कासिम को नवाब बना दिया।

- सामान्यत: माना जाता है कि सत्ता परिवर्तन के सन्दर्भ में प्रतिक्रिया या विद्रोह स्वभाविक हो जाता है। किन्तु इस परिवर्तन का बंगाल में किसी प्रभावी विरोध का न होना तथा इसके बाद अंग्रेजों को जो राजनैतिक और आर्थिक लाभ प्राप्त हुये उसे देखते हुए तत्कालीन गवर्नर वेन्सिटार्ट ने इसे 1760 की क्रांति कहा।

- मीर कासिम के पास पर्याप्त प्रशासनिक अनुभव था अत: उसने शीघ्र ही आंकलित कर लिया कि अंग्रेजों का बंगाल व नवाब की प्रतिष्ठा से कोई लेना देना नही है वे केवल अपने स्वार्थों की पूर्ती के लिए बंगाल के संसाधनों का शोषण कर रहे हैं।

दस्तक का दुरुपयोग कासिम और अंग्रेजों के बीच मतभेद को बढाने का महत्वपूर्ण कारक बना क्योंकि इसके दुरुपयोग से बंगाल के राजस्व को लगातार

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

हानि हो रही थी और अंग्रेज कासिम की इस शिकायत को मानने हेतु तैयार नहीं थे अतः कासिम ने दो निर्णय लिए-

a- भारतीय व्यापारियों को भी चुंगी रहित व्यापार की छूट देदी।

b- सभी व्यापारियों पर अतिरिक्त कर (Tax) लगा दिया।

कासिम के इन निर्णयों से अब मतभेद संघर्ष का रूप धारण करने लगा और इसी समय कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शीदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित कर दी, अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित कराने लगा और मुंगेर में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना कराई और 1763 में ही कासिम व अंग्रेजों के मध्य संघर्ष शुरू हो गया और अंग्रेजों ने कासिम को नवाब पद से हटाकर पुनः मीर जाफर को नवाब बना दिया।

- इन्हीं परिस्थितियों में मीर कासिम ने अवध के नवाब सुजाउद्दौला तथा मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध एक त्रिगुट बनाया और बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी।

- बक्सर के युद्ध में भारतीय शक्तियों के पास कई गुना अधिक सैन्यबल था किन्तु आधुनिक व अनुशासित सैन्य बल की रणनीति के समक्ष भारतीय शक्तियां टिक न सकीं वस्तुतः बक्सर का युद्ध प्लासी की तरह

षड्यन्त्र न होकर वास्तविक युद्ध था जहां शौर्य, पराक्रम, युद्ध कौशल व रणनीति के आधार पर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में अंग्रेजों ने विजय हासिल की और इस तरह 1764 के इस युद्ध में उत्तर भारत की तीन महत्वपूर्ण शक्तियों को परास्त कर अब अंग्रेज वास्तव में एक महत्वपूर्ण राजनैतिक ताकत के रूप में उभरे और निश्चित ही इसके बाद भारत में साम्राज्य स्थापना की उनकी महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी और इसी सन्दर्भ में कहा गया कि "प्लासी के युद्ध के निर्णय की पुष्टि बक्सर ने कर दी"।

⇒ 1765: इलाहाबाद की संधि :

- बक्सर की विजय के बाद 1765 में अंग्रेजों, मुगल सम्राट व अवध के नवाब सुजाउद्दौला के मध्य इलाहाबाद की संधि हुई और इसी सन्दर्भ में अंग्रेजों ने बंगाल में द्वैध शासन लागू किया।

उल्लेखनीय है कि जब एक ही राज्य के विषय को दो अलग-2 शक्तियां निर्देशित करें तो यही द्वैध शासन कहलाता है। और यह स्वभाविक है कि यदि शक्तियों का विभाजन सही तरीके से न किया जाये तो उस राज्य में निश्चित ही अराजकता की स्थिति पैदा हो जायेगी।

- इलाहाबाद की संधि से अंग्रेजों ने मुगल सम्राट से बंगाल की दीवानी का अधिकार प्राप्त कर लिया किन्तु निजामत

बंगाल के नवाब के पास ही रहने दी इस तरह राजस्व जैसा महत्वपूर्ण अधिकार तो अंग्रेजों के हाथों में आ गया किन्तु उत्तरदायित्व व जवाब-देहिता नवाब के पास रहने दिया।

उल्लेखनीय है कि अधिकार व कर्तव्य में उचित सन्तुलन व सामंजस्य का होना आवश्यक है क्योंकि यदि केवल अधिकार प्रभावी रहें तो शोषणकारी / तानाशाही प्रवृत्ति हावी हो जायेगी और यदि केवल उत्तरदायित्व ही बने रहे तो कार्य के प्रति अनिच्छा बढ़ने लगती है और बंगाल में भी यही हुआ 1765 से 72 के इस द्वैध शासन के दौरान बंगाल के संसाधनों की निर्लज्जतम लूट हुई और यह कहा गया कि "बंगाल अब रक्त प्रवाहित व लुटा हुआ राज्य बनकर रह गया" ब्रिटिश सांसद लॉर्ड कार्नवाल ने इसे दुनिया की सबसे भ्रष्ट सरकार माना।

अंग्रेजों ने पुनः चालाकी का प्रयोग करते हुए बंगाल का शासन अपने हाथों में नहीं लिया और यहां तक कि राजस्व वसूली के लिए दो भारतीय उप-दीवानों की नियुक्ति की जिससे वे किसी भी प्रकार के असंतोष व विद्रोह से बचे रहें। इस द्वैध शासन के दौरान बंगाल का इस कदर शोषण किया गया कि 1770 में वहां भीषण अकाल पड़ा और असंख्य लोगों को मृत्यु का शिकार होना पड़ा।

KES IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रश्न- यदि बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की हार हो जाती तो प्लासी की घटना भारतीय इतिहास में मात्र कहानी बनकर रह जाती - 150

प्रश्न:- डुप्ले (फ्रांसीसियों) ने भारत की चाबी को दक्षिण भारत में खोजने का प्रयास किया किन्तु असफल रहा, जिसे क्लाइव (अंग्रेजो ने) ने बंगाल में सफलता पूर्वक खोज लिया।

- भारत की सम्पन्नता से प्रेरित होकर विभिन्न यूरोपीय कंपनियां भारत आयीं और एकाधिकार स्थापना के क्रम में अन्ततः फ्रांसीसियों व ब्रिटिश शक्ति के मध्य निर्णायक प्रतिस्पर्धा हुई।

फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने अपनी योग्यता व कूटनीति से भारत के आंतरिक-राजनैतिक मामलों में हस्तक्षेप की शुरुआत कर फ्रांसीसी शक्ति को भारत में प्रभावी बनाना शुरू कर दिया और एक समय यह लगने लगा था कि भारत पर संभवतः फ्रांसीसी प्रभुत्व स्थापित हो जायेगा।

किन्तु कुछ ही वर्षों बाद अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों पर निर्णायक जीत हासिल की और वे भारत के भाग्य विधाता बन बैठे अतः यह स्वभाविक प्रश्न उठता है कि आखिर अंग्रेजों की ही विजय क्यों हुई और इस सन्दर्भ में डुप्ले या फ्रांसीसियों को पाण्डिचेरी / दक्षिण भारत से आधार बनाकर आगे बढ़ना और अंग्रेजों का बंगाल को आधार बनाकर भारत की सत्ता हासिल करना, की रणनीति की तुलना आवश्यक हो जाती है क्योंकि -

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES

१- पाण्डिचेरी / दक्षिण भारत की तुलना में बंगाल का अधिक संसाधन सम्पन्न होना तथा व्यापारिक व औद्योगिक रूप से भी बंगाल का प्रतिष्ठित होना स्पष्ट करता है कि पाण्डिचेरी का आर्थिक आधार बंगाल की तुलना में कमजोर था जबकि भारत में साम्राज्य स्थापना हेतु अधिक संसाधनों या वित्त की आवश्यकता थी।

२- बंगाल की भू-राजनीति दक्षिण भारत की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण थी क्योंकि दक्षिण भारतीय क्षेत्र में मराठे व मैसूर जैसी क्षेत्रीय शक्तियां साथ ही पुर्तगाली व डच जैसी विदेशी शक्तियां भी मौजूद थी जबकि बंगाल मराठों और अफगानों के आक्रमण से दूर भी था तथा अवध जैसा बफर राज्य भी उपस्थित था।

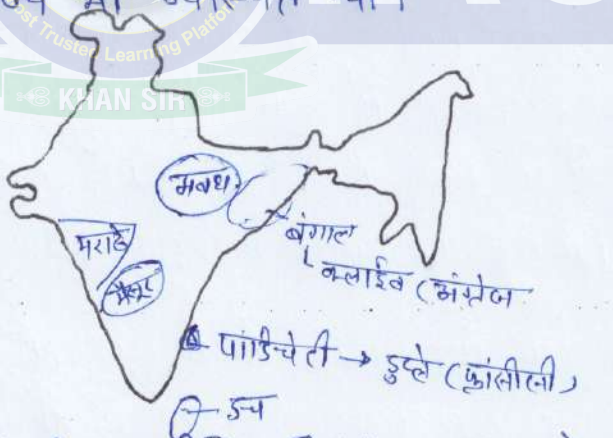

अतः डुप्ले भले ही कूटनीतिज्ञता में बेहतर रहा हो तथा साम्राज्य स्थापना का प्रयास उसी ने आरम्भ किया हो किन्तु बंगाल को आधार के तौर पर उपयोग किये जाने के कारण अंततः भारत में साम्राज्य स्थापना अंग्रेजों ने की।

⇒ * मैसूर विजय

- मैसूर साम्राज्य की स्थापना विजयनगर साम्राज्य के ध्वंस पर हुई जहां वड्यार वंश का शासन था।
- मैसूर की सेना में अपनी प्रतिभा व योग्यता से एक सामान्य सैनिक व सेना-पति होते हुये 1761 में मैसूर का राजा बन बैठा जिसे हैदर अली के नाम से जाना गया, अपने सेनापतित्व के बल पर कुछ ही समय में हैदर ने इसे दक्षिण भारत की प्रमुख शक्ति बना दिया और मैसूर का क्षेत्रीय विस्तार भी करता रहा। डिंडिगुल नामक स्थान पर इसने आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना कराई। इस प्रकार हैदर के नेतृत्व में मैसूर एक प्रभावी राज्य बनकर उभरने लगा।

दूसरी तरफ अंग्रेजों के मैसूर की ओर आकर्षित होने के निम्नलिखित कारक थे+

- 1760 में फ्रांसीसियों को शिकस्त देने के बाद और बंगाल पर आधिपत्य स्थापित करने के बाद अंग्रेजों की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा का बढ़ना स्वाभाविक था।
- मैसूर की भू-राजनीतिक स्थिति भी अति-महत्वपूर्ण थी क्योंकि मराठा क्षेत्र हैदराबाद व कर्नाटक तीनों यहां से लगभग समान दूरी पर थे और अंग्रेजों का मद्रास जैसा प्रशासनिक केन्द्र भी नजदीक था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- मैसूर पर नियंत्रण का अर्थ था मालाबार तट पर नियंत्रण और साथ ही काली मिर्च, इलाइची व चंदन के व्यापार पर भी प्रभावी पकड़।

- इसके साथ ही मैसूर की बढ़ती शक्ति से पड़ोसी राज्य ईर्ष्या करने लगे वे भी अंग्रेजों को अपनी फूट डालो और राज करो की नीति के अनुकूल लगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR